दुख भंजनी साहब

गउड़ी महला ५ मांझ ॥

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥

आठ पहर आराधीऐ पूरन सतगुिर ग्यानु ॥ १ ॥

रहाउ ॥

जितु घट विसै पारब्रहमु सोयी सुहावा थाउ ॥

जम कंकरु नेड़ि न आवयी रसना हरि गुन गाउ ॥ १ ॥

सेवा सुरति न जाणिया ना जापै आराधि॥

ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि॥ २ ॥

भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥

तती वाउ न लगयी सतगुरि रिखे आपि॥ ३ ॥

गुरु नारायनु दयु गुरु गुरु सचा सरिजणहारु ॥

गुरि तुठै सभ कछ्छि पायआ जन नानक सद बलेहार ॥ ४ ॥ २ ॥

१७० ॥

गउड़ी महला ५ ॥

सूके हरे कीए खनि माहे ॥

अंमृत द्रसिटि सिंचि जीवाए ॥ १ ॥

काटे कसट पूरे गुरदेव ॥

सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥ १ ॥

रहाउ ॥

मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥

करी दया सतिगुरि गुणतासा ॥ २ ॥

दुख नाठे सुख आइ समाए ॥

ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥ ३ ॥

इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥

नानक ते जन सुफल फले ॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

ताप गए पाई प्रभि सांति ॥

सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥ १ ॥

प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥

जनम जनम के बिछुरे मेले ॥ १ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

समिरत समिरत प्रभ का नाउ ॥

सगल रोग का बनिस्या थाउ ॥ २ ॥

सहजि सुभाय बोलै हरि बानी ॥

आठ पहर प्रभ समिरहु प्रानी ॥ ३ ॥

दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥

कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥ ४ ॥ ५९ ॥ १२८ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

जसि सुमिरत दूखु सभु जाय ॥

नामु रतनु वसै मनि आइ ॥ १ ॥

जपि मिन मेरे गोवनि्द की बानी ॥

साधू जन रामु रसन वखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥

जा की द्रसिटि सिदा सुखु होइ ॥ २ ॥

साजनु मीतु सखा करि एकु ॥

हरि हरि अखर मन मह लेखु ॥ ३ ॥

रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥

गुन गावै नानकु अंतरजामी ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १३१ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

कोटि बिघिन हरि खनि माह ॥

हरि हरि कथा साधसंगि सुनाह ॥ १ ॥

पीवत राम रसु अंमृत गुन जासु ॥

जपि हरि चरन मिटी खुधि तासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सरब कल्यान सुख सहज नधिान ॥

जा कै रदिै वसह भगवान ॥ २ ॥

अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥

करणैहारु रदिै मह धारु ॥ ३ ॥

तजि सभि भिरम भज्यो पारब्रहमु ॥

कहु नानक अटल इहु धरमु ॥ ४ ॥ ८० ॥ १४९ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

सांति भिई गुर गोबदि पािायी ॥

ताप पाप बनिसे मेरे भायी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

राम नामु नति रसन बखान ॥

बनिसे रोग भए कल्यान ॥ १ ॥

पारब्रहम गुन अगम बीचार ॥

साधू संगमहिै नसितार ॥ २ ॥

नरिमल गुन गावहु नति नीत ॥

गई ब्याधउिबरे जन मीत ॥ ३ ॥

मन बच क्रम प्रभु अपना ध्यायी ॥

नानक दास तेरी सरणायी ॥ ४ ॥ १०२ ॥ १७१ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

नेत्र प्रगासु कयिा गुरदेव ॥

भरम गए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सीतला ते रख्या बेहारी ॥

पारब्रहम प्रभ करिपा धारी ॥ १ ॥

नानक नामु जपै सो जीवै ॥

साधसंगहिरअिंमृतु पीवै ॥ २ ॥ १०३ ॥ १७२ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

थिरु घरि बैसहु हरि जन प्यारे ॥

सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥ १ ॥

रहाउ ॥

दुसट दूत परमेसरि मारे ॥

जन की पैज रखी करतारे ॥ १ ॥

बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥

अंमृत नाम महा रस पीने ॥ २ ॥

निरभउ होइ भजहु भगवान ॥

साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥ ३ ॥

सरनि परे प्रभ अंतरजामी ॥

नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥ ४ ॥ १०८ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

राखु पिता प्रभ मेरे ॥

मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥ १ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

पंच बखिादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥

खेदु करह अरु बहुतु संतावह आइयो सरनि तुहारे ॥ १ ॥

करि करि हार्यो अनकि बहु भाती छोडह कतहूं नाही ॥

एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥ २ ॥

करि किरिपा संत मलिे मोह तनि ते धीरजु पायआ ॥

संती मंतु दीयो मोह निरभउ गुर का सबदु कमायआ ॥ ३ ॥

जीति लिए ओइ महा बखिादी सहज सुहेली बानी ॥

कहु नानक मनि भिया परगासा पायआ पदु निरबानी ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२५ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

सरब कल्यान कीए गुरदेव ॥

सेवकु अपनी लाययो सेव ॥

बघिनु न लागै जपि अलख अभेव ॥ १ ॥

धरति पुनीत भई गुन गाए ॥

दुरतु गया हरि नामु ध्याए ॥ १ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

सभनी थांयी रव्या आपि ॥

आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥

गुर परसादि नि होइ संतापु ॥ २ ॥

गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥

नरिबिघिन होइ सभ थांयी वूठे ॥

सभि सुख पाए सतगिुर तूठे ॥ ३ ॥

पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥

जथि कथि दीसह नाले ॥

नानक दास खसमि प्रितपािले ॥ ४ ॥ २ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

चरन कमल प्रभ हरिदै ध्याए ॥

रोग गए सगले सुख पाए ॥ १ ॥

गुरि दुखु काट्या दीनो दानु ॥

सफल जनमु जीवन परवानु ॥ १ ॥

रहाउ ॥

अकथ कथा अंमृत प्रभ बानी ॥

कहु नानक जपि जीवे ग्यानी ॥ २ ॥ २ ॥ २० ॥

बलिावलु महला ५ ॥

सांति पायी गुरि सतिगुरि पूरे ॥

सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ताप पाप संताप बनिासे ॥

हरि सिमिरत कलिवखि सभि नासे ॥ १ ॥

अनदु करहु मिलि सुन्दर नारी ॥

गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥ २ ॥ ३ ॥ २१ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

सगल अनन्दु कयिा परमेसरि अपना बरिदु समार्या ॥

साध जना होए करिपाला बगिसे सभि परवार्या ॥ १ ॥

कारजु सतगिुरि आपि सिवार्या ॥

वडी आरजा हरि गोबिन्दि की सूख मंगल कल्यान बीचार्या ॥

१ ॥

रहाउ ॥

वण त्रनि त्रभिवन हर्या होए सगले जयि साधार्या ॥

मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजार्या ॥ २ ॥ ५ ॥ २३ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

रोगु गया प्रभि आपि गिवायआ ॥

नीद पई सुख सहज घरु आया ॥ १ ॥

रहाउ ॥

रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भायी ॥

अंमृत नामु रदि माह ध्यायी ॥ १ ॥

नानक गुर पूरे सरनायी ॥

जनि अिपने नाम की पैज रखायी ॥ २ ॥ ८ ॥ २६ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

ताप संताप सगले गए बनिसे ते रोग ॥

पारब्रहमि तू बखस्या संतन रस भोग ॥

रहाउ ॥

सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥

गुन गावहु निति राम के इह अवखद जोग ॥ १ ॥

आइ बसहु घर देस मह इह भले संजोग ॥

नानक प्रभ सुप्रसन्न भए लह गए ब्योग ॥ २ ॥ १० ॥ २८ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

बंधन काटे आपि प्रिभि होआ करिपाल ॥

दीन दयाल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥ १ ॥

गुरि पूरै करिपा करी काट्या दुखु रोगु ॥

मनु तनु सीतलु सुखी भया प्रभ ध्यावन जोगु ॥ १ ॥

रहाउ ॥

अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न व्यापै ॥

साधसंगि मनि तनि हिति फिरि दूखु न जापै ॥ २ ॥

हरि हिरि हिरि हिरि जापीऐ अंतरि लिवि लायी ॥

कलिविखि उतरह सुधु होइ साधू सरणायी ॥ ३ ॥

सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बिलायी ॥

महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुन गायी ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५३ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

बलिावलु महला ५ ॥

हरि हिरि हिरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥

रामचन्द की लसटकिा जनि मिार्या रोगु ॥ १ ॥

रहाउ ॥

गुरु पूरा हरि जािपीऐ नति कीचै भोगु ॥

साधसंगति कै वारनै मलि्या संजोगु ॥ १ ॥

जसिु समिरत सुखु पाईऐ बनिसै ब्योगु ॥

नानक प्रभ सरणागती करन कारन जोगु ॥ २ ॥ ३४ ॥ ६४ ॥

रागु बलिावलु महला ५ दुपदे घरु ५

१ੴ सतगिुर प्रसादि॥

अवरि उपाव सभि त्यािग्या दारू नामु लया ॥

ताप पाप सभि मिटिे रोग सीतल मनु भया ॥ १ ॥

गुरु पूरा आराध्या सगला दुखु गया ॥

राखनहारै राख्या अपनी करि मिया ॥ १ ॥

रहाउ ॥

बाह पकड़ि प्रिभि काढ्या कीना अपनया ॥

समिरि सिमिरि मिन तन सुखी नानक निरिभया ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

रोगु मटिायआ आपि प्रिभि उपज्या सुखु सांति ॥

वड परतापु अचरज रूपु हरि कीिनी दाति ॥ १ ॥

गुरि गोविन्दि क्रिपा करी राख्या मेरा भायी ॥

हम तसि की सरणागती जो सदा सहायी ॥ १ ॥

रहाउ ॥

बरिथी कदे न होवयी जन की अरदासि ॥

नानक जोरु गोविन्द का पूरन गुणतासि ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

ताती वाउ न लगयी पारब्रहम सरणायी ॥

चउगरिद हमारै राम कार दुखु लगै न भायी ॥ १ ॥

सतगिुरु पूरा भेट्या जनि बिनत बणायी ॥

राम नामु अउखधु दयिा एका लवि लायी ॥ १ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

राखि लीए तिनि रखनहारि सभ ब्याधि मिटाई ॥

कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ७९ ॥

बिलावलु महला ५ ॥

अपने बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥

सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥ १ ॥

रहाउ ॥

भगत जना की बेनती सुनी प्रभि आपि ॥

रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥ १ ॥

दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥

मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥

बिलावलु महला ५ ॥

तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥

सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥ १

॥

www.nitnempath.com

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

करु मसतकि धारि बालकु रखि लीनो ॥

प्रभि अंमृत नामु महा रसु दीनो ॥ १ ॥

दास की लाज रखै मेहरवानु ॥

गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥ २ ॥ ६ ॥ ८६ ॥

बलिावलु महला ५ ॥

ताप पाप ते राखे आप ॥

सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे मह जाप ॥ १ ॥

रहाउ ॥

करि किरिपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥

दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥ १ ॥

अनाथ को नाथु सरनि समरथा सगल स्रिसटि को माथी बापु ॥

भगति विछल भै भंजन सुआमी गुन गावत नानक आलाप ॥ २ ॥ २० ॥ १०६ ॥

सोरठि महला ५ ॥

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥

कोटि बिघन लाथे प्रभ सरना प्रगटे भले संजोगा ॥ १ ॥

प्रभ बानी सबदु सुभाख्या ॥

गावहु सुणहु पड़हु नित भायी गुर पूरै तू राख्या ॥

रहाउ ॥

साचा साहबु अमिति विडायी भगति विछल दयाला ॥

संता की पैज रखदा आया आदि बिरदु प्रतपाला ॥ २ ॥

हरि अंम्रृत नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥

जरा मरा तापु सभु नाठा गुन गोबिन्दि नित गावहु ॥ ३ ॥

सुनी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बनि आई ॥

प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वड्यायी ॥ ४ ॥ ११

॥

सोरठि महला ५ ॥

सूख मंगल कल्यान सहज धुनि प्रभ के चरन नेहार्या ॥

राखनहारै राख्यो बारकि सतगुरि तापु उतार्या ॥ १ ॥

उबरे सतगिुर की सरणायी ॥

जा की सेव न बरिथी जायी ॥

रहाउ ॥

घर मह सूख बाहरि फिुनि सूखा प्रभ अपुने भए दयाला ॥

नानक बघिनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ करिपाला ॥ २ ॥

१२ ॥ ४० ॥

सोरठि मि ५ ॥

गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै करिपा धारी ॥

आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥

हरि जीउ तू सुख सम्पति रासि॥

राखि लैहु भायी मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि॥

रहाउ ॥

जो मागउ सोयी सोयी पावउ अपने खसम भरोसा ॥

कहु नानक गुरु पूरा भेट्यो मट्यिो सगल अन्देसा ॥ २ ॥ १४ ॥

४२ ॥

सोरठि महला ५ ॥

समिरि सिमिरि गुरु सतगिुरु अपना सगला दूखु मटिायआि ॥

ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पायआि ॥ १ ॥

मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥

करन कारन समरथ सुआमी पूरन पुरखु बधिाता ॥

रहाउ ॥

अनन्द बनिोद मंगल गुन गावहु गुर नानक भए दयाला ॥

जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥ १५

॥ ४३ ॥

सोरठि महला ५ ॥

दुरतु गवायआि हरि प्रिभि आपे सभु संसारु उबार्या ॥

पारब्रहमि प्रिभि किरिपा धारी अपना बरिदु समार्या ॥ १ ॥

होयी राजे राम की रखवाली ॥

सूख सहज आनद गुन गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥

रहाउ ॥

पतति उधारनु सतगिुरु मेरा मोह तसि का भरवासा ॥

बखसि लिए सभि सचै साहबि सुनि नानक की अरदासा ॥ २ ॥

१७ ॥ ४५ ॥

सोरठि महला ५ ॥

बखस्या पारब्रहम परमेसरि सिगले रोग बदिारे ॥

गुर पूरे की सरनी उबरे कारज सगल सवारे ॥ १ ॥

हरि जिनि सिमिर्या नाम अधारि ॥

तापु उतार्या सतगिुरि पूरै अपनी करिपा धारि ॥

रहाउ ॥

सदा अनन्द करह मेरे प्यारे हरि गोवदिु गुरि राख्या ॥

वडी वड्यायी नानक करते की साचु सबदु सति भाख्या ॥ २ ॥

१८ ॥ ४६ ॥

सोरठि महला ५ ॥

भए क्रपिाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥

सतगिुरि तापु गवायआ भायी ठांढि पिई संसारि ॥

अपने जयि जंत आपे राखे जमहि कीयो हटतारि ॥ १ ॥

हरि के चरन रदिै उरि धारि ॥

सदा सदा प्रभु समिरीऐ भायी दुख कलिबखि काटणहारु ॥ १ ॥

रहाउ ॥

तसि की सरनी ऊबरै भायी जनि रिच्या सभु कोइ ॥

करन कारन समरथु सो भायी सचै सची सोइ ॥

नानक प्रभू ध्याईऐ भायी मनु तनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ १९ ॥ ४७ ॥

सोरठि महला ५ ॥

संतहु हरि हरि नामु ध्यायी ॥

सुख सागर प्रभु वसिरउ नाही मन चन्दिअड़ा फलु पायी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सतगिुरि पूरै तापु गवायआ अपनी करिपा धारी ॥

पारब्रहम प्रभ भए दयाला दुखु मट्यिा सभ परवारी ॥ १ ॥

सरब नधिान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥

नानक पति राखी परमेसरि उधर्या सभु संसारो ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सोरठि महला ५ ॥

मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥

धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राख्या हरि गोविदु नवा निरोआ ॥ १ ॥

रहाउ ॥

तापु गया प्रभि आपि मिटायआ जन की लाज रखायी ॥

साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांयी ॥ १ ॥

हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुनु अवगुनु न बीचार्या ॥

अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धार्या ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥

सोरठि महला ५ ॥

जयि जंत्र सभि तिसि के कीए सोयी संत सहायी ॥

अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडायी ॥ १ ॥

पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥

गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दयाल ॥ १ ॥

www.nitnempath.com

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ॥

अनदनि नानकु नामु ध्याए जयि प्रान का दाता ॥

अपुने दास कउ कंठि लाय राखै ज्यु बारकि पति माता ॥ २ ॥

२२ ॥ ५० ॥

सोरठि महला ५ ॥

ठाढि पायी करतारे ॥

तापु छोडि गिया परवारे ॥

गुरि पूरै है राखी ॥

सरनि सिचे की ताकी ॥ १ ॥

परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥

सांति सिहज सुख खनि मह उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥

रहाउ ॥

हरि हिरि नामु दीयो दारू ॥

तिनि सिगला रोगु बिदारू ॥

अपनी किरपा धारी ॥

तिनि सिगली बात सवारी ॥ २ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

प्रभि अपना बिरदु समार्‍या ॥

हमरा गुनु अवगुनु न बीचार्‍या ॥

गुर का सबदु भइयो साखी ॥

तिनि सिगली लाज राखी ॥ ३ ॥

बोलायआ बोली तेरा ॥

तू साहबु गुनी गहेरा ॥

जपि नानक नामु सचु साखी ॥

अपुने दास की पैज राखी ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५६ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com